# सूक्ष्मजीव रोधी कपड़े

भारतीय शोधकर्ताओं ने ऐसा कपड़ा तैयार करने में सफलता हासिल की है जो सूक्ष्मजीव रोधी है। सूक्ष्मजीव इसके संपर्क में आते ही खत्म हो जाते हैं। इसे सूक्ष्मजीव रोधी बनाने के लिए नीम व मेक्सिकन डैज़ी के सत जैसे वनस्पति पदार्थों का उपयोग किया गया है।

उपरोक्त शोध कार्य में मुंबई के के.एम. कुंदनानी कॉलेज ऑफ फार्मेसी तथा पुणे के सिंहगढ़ इंस्टीट्यूट ऑफ फार्माश्यूटिकल साइन्सेज़ के वैज्ञानिकों ने भाग लिया।

सूक्ष्मजीव रोधी वस्त्र तैयार करने के लिए सूती कपड़ा लिया गया। फिर उपरोक्त वनस्पति उत्पादों को कुदरती गोंद के माइक्रोकैप्सूल में कैद कर दिया गया। माइक्रोकैप्सूलेशन के बाद इस पदार्थ को सूती कपड़े पर छपाई के दौरान लगाया गया। इस विधि की जानकारी *इंडियन जर्नल ऑफ फाइबर एण्ड टेक्सटाइल्स* के हाल के अंक में प्रकाशित हुई है।

प्रमुख शोधकर्ता जी. तिलकवती का कहना है कि माइक्रोकैप्सूलेशन की विशेषता यह है कि कपड़े पर छपने वाले कण अत्यंत महीन होते हैं। इस विधि से किसी भी पदार्थ को पैकेज करके भंडारित किया जा सकता है और फिर उपयुक्त परिस्थिति में यह धीरे-धीरे बाहर निकलता रहता है। इस तरह से तैयार किया गया सूक्ष्मजीव रोधी कपड़ा *स्टेफिलोकोकस ऑरीयस* तथा *एश्रीशिया कोली* जैसे बैक्टीरिया के विरुद्ध कारगर पाया गया है।

आप सोच रहे होंगे कि कपड़े को तो बार-बार धोया जाता है, तब इसके सूक्ष्मजीव रोधी गुण कब तक बने रहेंगे। शोधकर्ताओं ने बताया है कि अभी जो कपड़ा तैयार हुआ है उसे 15 बार धोने के बाद भी उसमें सूक्ष्मजीव रोधी गुण बरकरार रहते हैं।

इस तरह के कपड़ों का एक खास उपयोग चिकित्सकों व चिकित्या कार्य से जुड़े अन्य कर्मियों के लिए हो सकता है। अस्पताल में काम करते हुए वे लगातार सूक्ष्मजीवों के संपर्क में आते हैं। ***(स्रोत विशेष फीचर्स)***